हिन्दी

कक्षा IX

कक्षा 9 : सड़क सुरक्षा

सड़क सुरक्षा का ज्ञान – मिलता है जीवन दान

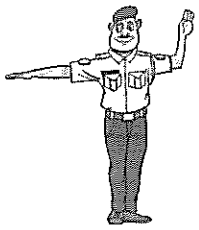

पाठ्यक्रम:

1. कक्षा आठ में सीखी गईं सड़क सुरक्षा सम्बन्धित बातों को दोहराना।

2. सड़क दुर्घटना के कारणों का विश्लेषण करना –

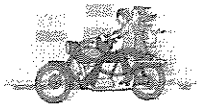

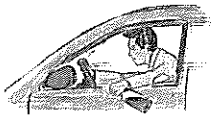

- युवावर्ग में तीव्र गति से वाहन चलाने की आदत।
- शराब पीकर गाड़ी चलाना।
- लाल बत्ती की परवाह न करके आगे निकल जाना।
- मोबाइल फोन पर बातें करना।
- गाड़ी की उचित देखभाल न करने पर उसमें खराबी होना, ब्रेक फेल होना, टायर फटना आदि।
- बालिग होने से पहले बिना ड्राइविंग लाइसेंस के गाड़ी चलाना।

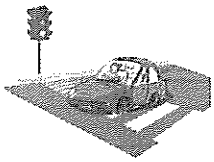

3. सड़क दुर्घटना से बचने के उपाय :

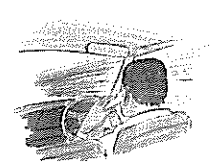

- सड़क सुरक्षा के नियम विनियमों की जानकारी का प्रचार करें।
- माता–पिता नाबालिग बच्चों को गाड़ी न चलानें दें तथा उनके द्वारा की जाने वाली गतिविधियों का ध्यान रखें।
- सड़क सुरक्षा के नियमों का उल्लघंन करने वाले को समझाएँ।
- गाड़ी की नियमित रूप से देखभाल करें।
- गाड़ी की गति पर नियंत्रण करें।
- बच्चों को प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण दें।

कहानी

राजू छुट्टी के दिन अपने पड़ोस के मित्र अरविंद के साथ साइबर कैफे जाता था। वहाँ वे दोनों कार रेस लगाने वाली वीडियो गेम खेला करते थे। राजू को कार चलाने का बहुत शौक था। नाबालिग होने के कारण उसके पिता उसे गाड़ी चलाने नहीं देते थे। वीडियो गेम खेलते हुए उसे लगता कि वह सचमुच कार चला रहा है और गेम में जीतने पर खुशी से चिल्लाने लगता।

एक दिन अरविंद ने राजू से पूछा, ''क्या तुम सचमुच कार चला सकते हो ?''

''हाँ, मैं कार चला सकता हूँ। मुझे कार के बारे में सब पता है। लेकिन पापा तो मुझे अपनी कार को हाथ तक लगाने नहीं देते।'' राजू ने लंबी साँस लेते हुए कहा। ''पर राजू, तुम्हारे पापा सही करते हैं क्योंकि अभी हम इतने बड़े नहीं हुए कि कार चला सकें।'' अरविंद ने उसे समझाते हुए कहा।

''पर मेरे कमलेश्वर अंकल का बेटा सोमू कार चलाता है। वह भी तो 13 वर्ष का है। मैंने उसे अपने ड्राइवर की बगल में बैठकर कार चलाते हुए देखा है। तो फिर मैं कार क्यों नहीं चला सकता।'' राजू ने कहा। ''पर राजू ड्राइवर के साथ बैठकर कार चलाने और अकेले कार चलाने में फ़र्क होता है। अगर तुम चाहो तो तुम मेरे ड्राइवर से कार चलाना सीखने के लिए अपने पापा से पूछ सकते हो।'' अरविंद ने कहा।

''पर मेरे पापा तो ऑफिस के काम से बाहर गए हैं। वे 15 दिन बाद लौटेंगे।'' राजू इतना कहकर चुप हो गया।अरविंद ने राजू को चुप बैठे देखा तो बोला, ''तुम उदास न हों, हम चुपचाप मेरे ड्राइवर से कार चलाना सीखेंगे। अभी तो हमारे स्कूल की भी छुट्टियाँ हैं।'' अरविंद की बात सुनकर राजू बहुत खुश हो गया और बोला, ''थैंक्स यार! यह तो बहुत ही अच्छा आइडिया है। मैं तुम्हारे ड्राइवर से कार चलाना सीख सकता हूँ।''

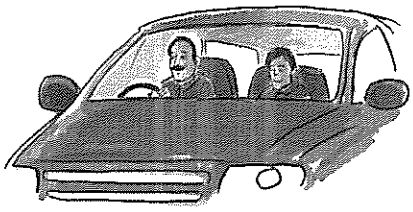

अरविंद ने ड्राइवर से पूछा तो वे गाड़ी सिखाने के लिए तैयार हो गया। उनके हाँ करने पर राजू खुशी से फूला नहीं समा रहा था क्योंकिकार चलाने का उसका सपना पूरा होने वाला था। दोनों मित्र ड्राइवर भैया, जिनका नाम संजय था, के साथ गाड़ी सीखने के लिए माल रोडगए। ड्राइवर ने पहले उन दोनों कोकार के अलग-अलग पुर्जों, जैसे -ब्रेक, गियर बॉक्स, स्टीयरिंग व्हील, सीट बेल्ट के बारे में बताया।उसके बाद वह खुदकार चलाने लगा औरबारी-बारी सेउन दोनों को भी कार चलाने के लिए स्टीयरिंग व्हील देने लगा। परन्तु उसने उन दोनों को पूरी तरह कारचलाने के लिए कभी नहीं दी।राजू ने घर में किसी को भी अरविंद के ड्राइवर से कार चलाना सीखने के बारे में नहीं बताया।

अगले दिन रविवार था। स्कूल की छुट्टियाँ भी ख़त्म हो रही थीं। अरविंद का ड्राइवर काम पर नहीं आया। राजू निराश हुआ पर दूसरे ही क्षण उसने अरविंद से कहा "चलो हम दोनों अपने आप कार चलाने चलते हैं। तुम्हारे पापाअभी वापिस नही आए हैं और हम दोनों कार चलाना भी सीख गए हैं।" राजू ने कहा।

''नहीं, अभी हम अपने आप कार नहीं चला सकते और हमारे पास नाबालिग होने के कारण ड्राइविंग लाइसेंस भी नहीं है।'' अरविंद ने कहा।

यह सुनकर राजू बहुत उदास हो गया। राजू को उदास देखकर अरविंद ने अकेले कार चलाने के लिए हाँ कर दी। दोनों ने अपने आप कार निकाली और घर के पास सर्विस लेन में चलाने लगे। पहले अरविंद ने कार चलाई। उसे कार चलाते देख राजू बोला, "अरे वाह! अरविंद तुम तो बहुत अच्छी कार चलाना सीख गए हो।'' यह सुनकर अरविंद खुश

हो गया और तेज़ कार चलाने लगा। राजू ने स्टीयरिंग व्हील पर हाथ रखा हुआ था। शाम हो गई थी पर सड़क की बत्तियाँ अभी जली नहीं थीं। कुछ लोग शाम की सैर कर रहे थे। राजू ने देखा दो व्यक्ति सड़क के बीचोंबीच धीरे–धीरे चल रहे थे। अरविंद ने हॉर्न दबाया, परन्तु वह नहीं बजा। "अरे! अरविंद क्या कर रहे हो ?" तब तक कार उन व्यक्तियों तक पहुँच गई थी।

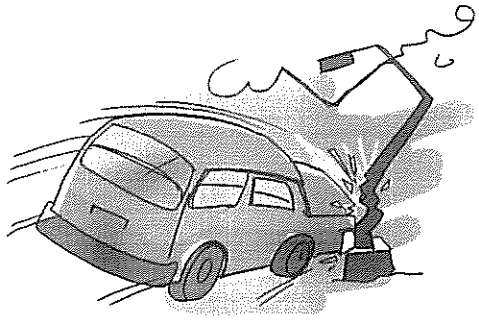

"ब्रेक लगाओ अरविंद!" राजू चिल्लाया।

अरविंद ने नीचे देखकर ब्रेक लगाने की कोशिश की तो पैर एक्सलरेटर पर जा पड़ा और कार और तेज़ हो गई।उनमें से एक व्यक्ति जो सड़क की ओर चल रहा था कार की चपेट में आ गया और कार के पहिए के साथ घिसटता चला गया। अरविंद बौखला गया। राजू ने कार को मोड़कर सीधा करने की कोशिश की तो वहएक पीछे से आते हुए स्कूटर से टकरा गई और फिर डिवाइडर से टकराकर रुक गई। राजू और अरविंद को गाड़ी के एयर बैग खुल जाने से ज़्यादा चोट नहीं लगी, परंतु जिस व्यक्ति को कार से टक्कर लगी थी उसकी कमर की हड्डी टूट गई।

राजू और अरविंद दोनों को पुलिस ने घटना स्थल पर आकर हिरासत में ले लिया। उन दोनों के घर के लोग पुलिस थाने गए और ज़मानत पर छोड़ दिया। राजू और अरविंद को इस दुर्घटना से बहुत बड़ा धक्का लगा। और उन्होंने बालिग होने तक कभी भी अकेले बिना ड्राइविंग लाइसेंस के कार न चलाने का वायदा किया।

प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. साइबर कैफे में जाकर दोनों मित्र क्या करते थे ?
2. दोनों मित्रों का गाड़ी चलाना सही था या नहीं ? कारण सहित बताइए।
3. अरविंद समय पर ब्रेक क्यों नही लगा पाया ?
4. व्यक्ति के कार से टकराने पर क्या हुआ ?
5. इस कहानी से आपको क्या सीख मिलती है ?

गतिविधियाँ

1. 'सड़क सुरक्षा' पर पोस्टर बनाकर अपनी कक्षा में तथा स्कूल के प्रांगण में लगाइए।
2. बच्चों को इंटरनेट के लाभ तथा नुकसान के बारे में बताइए।
3. अपने पड़ोस तथा आस पास के इलाके में जाकर लोगों को सड़क सुरक्षा के बारे में बताइए।
4. यदि कोई भी गाड़ी चलाने का प्रशिक्षण देने वाली संस्था बिना ठीक से प्रशिक्षण दिए लाइसेंस दिलवाती है तो उसकी शिकायत करते हुए एक पत्र लिखिए।
5. अखबारों में प्रतिदिन आने वाली सड़क दुर्घटनाओं के चित्र और खबरें एकत्रित करके स्कूल और कक्षा के नोटिस बोर्ड पर लगाइए।
6. दुर्घटना स्थल पर दी जाने वाली प्राथमिक चिकित्सा के बारे में बताइए और उसका अभ्यास कराइए।
7. कक्षा को दो समूहों में बाँटिए। 'पुलिस के भय से दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए या नहीं' विषय पर दोनों समूहों से आपस में चर्चा करके अपने विचार बताने के लिए कहिए।

अभ्यास:

(अ) निम्नलिखित का उपयोग क्यों किया जाता है ?
हैल्मेट, सीट-बेल्ट, ब्रेक, डिक्की, साइलेंसर, साइड इंडीकेटर

(ब) 'कर' प्रत्यय लगाकर तीन शब्द लिखें।
थककर ....., ..., ...

(स) कहानी में से क्रिया विशेषण शब्द छाँटिए।

(द) निम्नलिखित शब्दों से असंगत शब्दों पर X का निशान लगाइए।
बौनट, दुर्घटना, सीट बेल्ट, ब्रेक, पुलिस

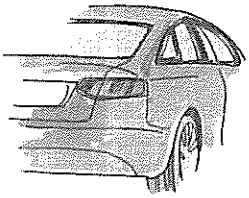
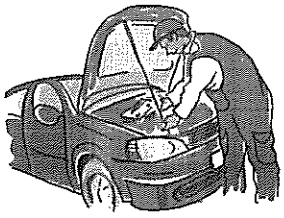

मोटर यान कानून 1988 – धारा 4

मोटर यान चलाने के संबंध में आयु सीमा

1) कोई भी व्यक्ति, जो अठारह वर्ष से कम आयु का है, किसी सार्वजनिक स्थान में मोटर यान नहीं चलाएगा। परंतु कोई व्यक्ति सोलह वर्ष की आयु का होने के पश्चात् किसी सार्वजनिक स्थान में (50 सी.सी. से अनधिक क्षमता वाली) मोटर साइकिल चला सकेगा।

2) धारा 18 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, कोई भी व्यक्ति, जो बीस वर्ष से कम आयु का है, किसी सार्वजनिक स्थान में परिवहन यान नहीं चलाएगा।

3) कोई शिक्षार्थी – अनुज्ञप्ति उस वर्ग के लिए, जिसके लिए उसने आवेदन किया है, उस सान को चलाने के लिए किसी व्यक्ति को तब तक नहीं दी जाएगी जब तक कि वह इस धारा के अधीन उस वर्ग के यान को चलाने के लिए पात्र नहीं है।

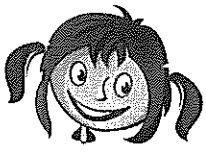

हिन्दी

कक्षा X

कक्षा 10 : सड़क सुरक्षा

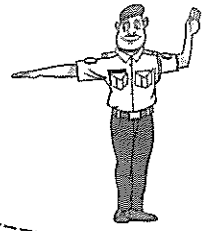

पाठ्यक्रम:

पिछली कक्षाओं में प्राप्त जानकारी को छात्रों के साथ दोहराना और सड़क सुरक्षा में उनकी भूमिका तथा कर्त्तव्यों पर प्रकाश डालना।

कर्तव्य

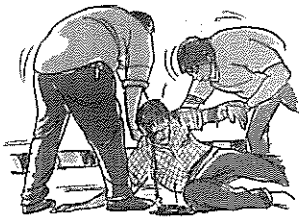

1. दुर्घटना स्थल से बचकर निकलने की जगह उन्हें घायल लोगों की सहायता करने के लिए प्रेरित करना।
2. गलत जगह पर गाड़ी पार्क करना, शराब पीकर गाड़ी चलाना, मोबाइल पर बातें करना– इन गलत बातों के परिणामों पर अपने घर, पड़ोस तथा अन्य लोगों के साथ बातचीत करना।

3. सड़क पर क्रोध का प्रदर्शन तथा लोगों के साथ दुर्व्यवहार न करना। ऐसी स्थिति में अपने ऊपर तथा परिवार के सदस्यों पर नियंत्रण रखना।
4. सड़क सुरक्षा के नियमों और विनियमों का पालन न करने से क्या दण्ड मिल सकता है, इस पर चर्चा करना।
5. जब तक गाड़ी चलाने का लाइसेंस न मिले, गाड़ी न चलाना।

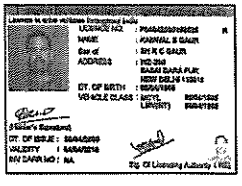

6. गाड़ी की नम्बर प्लेट का दिए गए निर्देशानुसार होना।
7. अलग–अलग स्थितियों में कैसे गाड़ी चलानी चाहिए– वर्षा में, कुहरे में, रात में आदि का।
8. लोगों को गाड़ी की गति नापने की मशीन, साँस द्वारा शराब की मात्रा की जाँच करने वाली मशीन, रेड स्पीड कैमरा, रिफलेक्टर तथा इन्टर–सेप्टर के विषय में जानकारी देना।

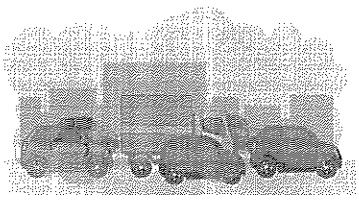

9. नशीले पदार्थों के सेवन से सड़क दुर्घटनाओं के दुष्परिणामोंके बारे में बताना।

10. गाड़ी चलाते समय उसमें गाड़ी के रजिस्ट्रेशन, बीमा, प्रदूषण नियंत्रण से से संबंधित कागज़ात होना।

11. दुर्घटना के समय उचित प्राथमिक चिकित्सा देने के विषय में बातचीत करना।

कहानी

राजू फटी आँखो से उस पन्ने को देख रहा था जो एक अन्तर्देशीय लिफाफे पर लिखा गया था। राजू के बड़े भाई निखिल की आँखों से आँसुओं की धार बह रही थी। उसने ही यह पत्र राजू को पढ़ने के लिए दिया।

प्रिय बेटा निखिल,

मैं जतिन गाँधी का अभागा पिता तुम्हें यह पत्र लिख रहा हूँ। तुमने मेरे बेटे के मृत शरीर सुरक्षित भिजवा दिया, उसके लिए मैं तुम्हारा आभारी हूँ। जतिन मेरा इकलौता बेटा था। मैं पोस्ट ऑफिस में क्लर्क की नौकरी करता था। मैं और मेरी पत्नी अपना पेट काटकर जतिन की पढ़ाई की फीस भरते थे। वह इन्जीनियर बनकर हमारे जीवन का आधार और बुढ़ापे का सहारा बनना चाहता था। हम उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। वह आया अवश्य, परन्तु कफ़न में लिपटकर। हमारा सहारा बनने की जगह हमें उसकी अर्थी को कंधा देना पड़ा। विधि का यही विधान था। हम लोग उसके निधन पर आँसू बहाने के सिवाय कर ही क्या सकते थे।

बेटा! जतिन तुम्हारी बातें हर पत्र में लिखता था। वह तुम्हें बहुत मानता था। मुझ बूढ़े पर एक अहसान कर सकोगे ?क्या तुम कुछ दिनों के लिए हमारे गाँव आ सकते हो ? मैं और जतिन की माँ तुम्हारे साथ बैठकर अपने बेटे के बारे में बातें करना चाहते हैं। पैसों की तंगी के कारण वह दो वर्षों से घर भी नहीं आया। अब वह कैसा लगता था ? क्या हमारे बारे में तुम से बातें करता था ?तुम्हें हमारा आशीर्वाद।

तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा में,
वेल गाँधी

राजू ने पत्र पढ़कर निखिल की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। निखिल ने उसे भयंकर रात की घटना सुनाई जिसने उसके जीवन को झकझोर के रख दिया। निखिल और उसके तीन मित्र होस्टल में आस पास के कमरों में रहते थे। जतिन उनमे सबसे छोटा था। उनकी इन्जीनियरिंग की पढ़ाई का आखिरी वर्ष था। कुछ ही महीनों में वे घर वापिस लौट जाते और अच्छी नौकरियाँ पाकर जीवन में आगे बढ़ते। 31 दिसम्बर की शाम थी। इन चारों ने नएवर्ष के स्वागत की पार्टी में जाने का निश्चय किया। निखिल को अपना प्रोजेक्ट पूरा करना था, इसलिए उसने जाने से मना कर दिया। उसकी जगह पास वाले कमरे में रहने वाले नरेन्द्र ने उनको अपनी गाड़ी में ले जाने का सुझाव दिय। पार्टी में

काफी चहल-पहल थी। इन मित्रों में से किसी को भी शराब पीने का शौक नहीं था। परन्तु जैसा कि इस उम्र के युवाओं में आदत होती है, कुछ लोगों ने उन्हे ज़बरदस्ती शराब पिला दी थी।

रात के दो बजे उन लोगों ने वापिस जाने का निश्चय किया। बाहर चारों तरफ कोहरा छाया हुआ था। नरेन्द्र गाड़ी चला रहा था। हेड लाइट जला कर भी उसे ज्यादा कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। पार्टी में जोर जोर से शोर मचाकर नाचने से बाकी लोग अपनी आँखें बंद करके सौ गए। नरेन्द्र की आँखों में भी नींद भरी हुई थी। अचानक गाड़ी जाकर फ्लाई ओवर के खम्बे से टकराई। नरेन्द्र के अलावा बाकी तीनों की उसी समय मृत्यु हो गई और नरेन्द्र की कई हडिडयाँ टूट गईं।

सुबह तीन बजे निखिल का मोबाइल बजा और यह खबर सुनकर वह अवाक् रह गया। उसका सारा शरीर काँपने लगा। मृतकों को पहचानकर उनके माता-पिता का खबर देना और उन शवों को शवग्रह में रखवाना, इन सभी बातों ने निखिल को शारीरिक और मानसिक रूप से हिलाकर रख दिया। कल तक जिन मित्रों के साथ वह अपने जीवन के सुख-दुख बाँटता था, आज बिना आवाज़ किए, प्राणहीन थे। उनके माता-पिता की हृदय विदारक चीखें उसे रातभर जगा कर रखती थीं। और अब यह पत्र! आख़िर कैसे खड़ा होगा वह, वेलू गांधी के सामने ?

प्रश्नोत्तरः-

1. राजू किसके पत्र को पढ़ रहा था ?
2. जतिन के माता-पिता ने उसका पालन-पोषण कैसेकिया था ?
3. कहानी में हुई दुर्घटना का क्या कारण था ?
4. इस कहानी से मिलने वाली शिक्षा को अपने शब्दों में लिखें।

गतिविधियाँ

1. दैनिक समाचार पत्रों में से सड़क दुर्घटना के समाचार तथा चित्र काटकर उनसे एक कोलाज बनाएँ।

2. विद्यालय में सड़क सुरक्षा सम्बन्धी सेमिनार का आयोजन करें। जिसमें छात्रों के माता-पिता को भी आमंत्रित करें।

3. "सड़क सुरक्षा का उत्तरदायित्व नागरिकों पर है या सरकार पर" विषय पर कक्षा में एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करें।

4. नशीले पदार्थ अथवा शराब का सेवन करने के दुष्परिणामों पर चर्चा करें।